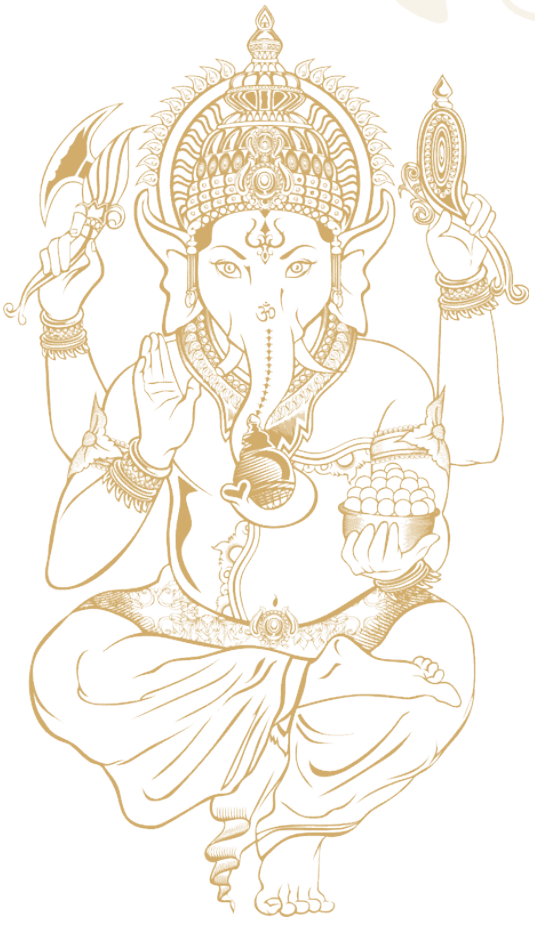

Ashutosh mishra

Shiwalika

Model: Web-FreeMatching

Order No: 120984316

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
18/09/1996	जन्म तिथि	08/09/1996
बुधवार	दिन	रविवार
घंटे 19:55:00	जन्म समय	15:23:00 घंटे
घटी 35:22:40	जन्म समय(घटी)	24:13:24 घटी
India	देश	India
Basti	स्थान	Gorakhpur
26:48:00 उत्तर	अक्षांश	26:45:00 उत्तर
82:44:00 पूर्व	रेखांश	83:23:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे 00:00:56	स्थानिक संस्कार	00:03:32 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
05:45:55	सूर्योदय	05:39:04
17:59:56	सूर्यास्त	18:08:37
23:48:43	चित्रपक्षीय अयनांश	23:48:42

विंशोत्तरी		अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी	
शनि 11वर्ष 9मा 29दि		12:15:32	मेष	लग्न	मक	02:27:35	गुरु 1वर्ष 3मा 26दि	
केतु		02:07:55	कन्या	सूर्य	सिंह	22:12:25	बुध	
19/07/2025		08:21:54	वृश्चि	चंद्र	कर्क	02:13:54	04/01/2017	
18/07/2032		11:38:34	कर्क	मंगल	कर्क	05:17:40	04/01/2034	
केतु	15/12/2025	00:00:39	कन्या व	बुध व	कन्या	08:46:20	बुध	02/06/2019
शुक्र	14/02/2027	14:21:49	धनु	गुरु	धनु	14:02:41	केतु	30/05/2020
सूर्य	22/06/2027	18:34:31	कर्क	शुक्र	कर्क	07:28:02	शुक्र	30/03/2023
चन्द्र	21/01/2028	10:47:24	मीन व	शनि व	मीन	11:32:47	सूर्य	04/02/2024
मंगल	18/06/2028	14:13:25	कन्या	राहु व	कन्या	14:23:20	चन्द्र	05/07/2025
राहु	06/07/2029	14:13:25	मीन	केतु व	मीन	14:23:20	मंगल	03/07/2026
गुरु	12/06/2030	07:01:05	मक व	हर्ष व	मक	07:13:51	राहु	19/01/2029
शनि	22/07/2031	01:15:11	मक व	नेप व	मक	01:22:36	गुरु	27/04/2031
बुध	18/07/2032	06:56:40	वृश्चि	प्लूटो	वृश्चि	06:45:17	शनि	04/01/2034

लग्न-चलित

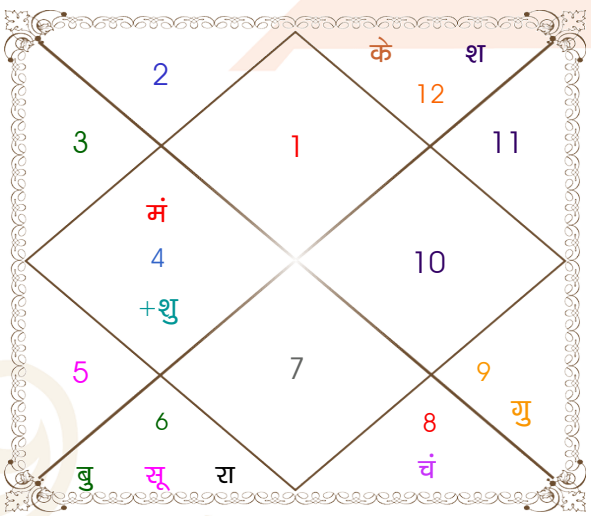

लग्न-चलित

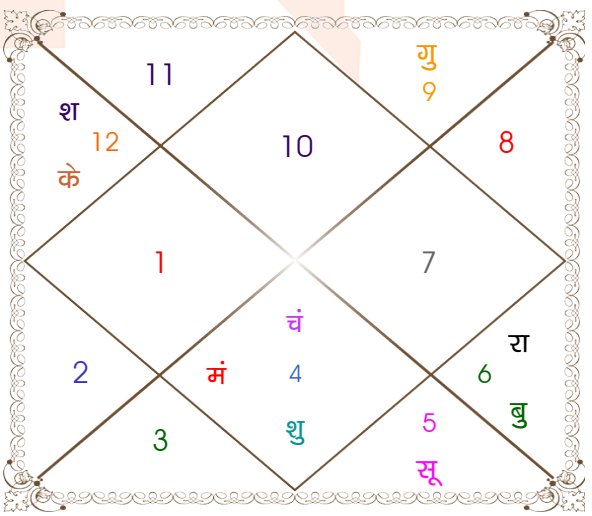

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	विप्र	विप्र	1	1.00	--	जातीय कर्म
वश्य	कीटक	जलचर	2	1.00	--	स्वभाव
तारा	सम्पत	अतिमित्र	3	3.00	--	भाग्य
योनि	मृग	मार्जार	4	2.00	--	यौन विचार
मैत्री	मंगल	चन्द्र	5	4.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	देव	देव	6	6.00	--	सामाजिकता
भकूट	वृश्चिक	कर्क	7	0.00	हाँ	जीवन शैली
नाड़ी	मध्य	आद्य	8	8.00	--	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	25.00		

भकूट दोष प्रभावहीन है क्योंकि दोनों के राशि स्वामियों में मित्रता है।

Ashutosh mishra का वर्ग सर्प है तथा ौपूंसपां का वर्ग मेष है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार Ashutosh mishra और ौपूंसपां का मिलान अत्युत्तम है।

मंगलीक दोष मिलान

Ashutosh mishra मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में चतुर्थ भाव में स्थित है।

चतुः सप्तमे भौमो मेषकर्कटे निग्रहः।
कुजदोषो न विद्यते।।

अर्थात् चतुर्थ तथा सप्तम भाव में यदि मेष या कर्क का मंगल हो तो कुजदोष समाप्त हो जाता है। क्योंकि मंगल Ashutosh mishra कि कुण्डली में चतुर्थ भाव में कर्क राशि में स्थित है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

भौमेः वक्रिणि नीचगृहे वाऽर्कस्थेऽपि वा न कुजदोषः।

अर्थात् यदि मंगल वक्री, नीच, अस्त का हो तो मंगल दोष नहीं होता है।

क्योंकि मंगल Ashutosh mishra कि कुण्डली में नीच का है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

ौपूंसपां मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में सप्तम् भाव में स्थित है।

चतुः सप्तमे भौमो मेषकर्कटे निग्रहः।

कुजदोषो न विद्यते।।

अर्थात् चतुर्थ तथा सप्तम भाव में यदि मेष या कर्क का मंगल हो तो कुजदोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि मंगलौपूंसपां कि कुण्डली में सप्तम् भाव में कर्क राशि में स्थित है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

भौमेः वक्रिणि नीचगृहे वाऽर्कस्थेऽपि वा न कुजदोषः।

अर्थात् यदि मंगल वक्री, नीच, अस्त का हो तो मंगल दोष नहीं होता है।

क्योंकि मंगलौपूंसपां कि कुण्डली में नीच का है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

कुजजीवो समायुक्तो युक्तो व कुजचन्द्रमा।
न मंगली मंगल राहु योग।

यदि मंगल-गुरु या मंगल-राहु या मंगल-चंद्र एक राशि में हों तो मंगली दोष भंग हो जाता है।

क्योंकि मंगल एवं चन्द्रौपूंसपां कि कुण्डली में एक राशि में हैं अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि शनि ौपूंसपां कि कुण्डली में तृतीय भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि राहु Ashutosh mishra कि कुण्डली में षष्ठ भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

Ashutosh mishra तथौपूंसपां में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।